

गोपाल कृष्ण गोखले

प्रलिम्स के लिये:

गोपाल कृष्ण गोखले, भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस ।

मेन्स के लिये:

आधुनिक भारतीय इतिहास, महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्व ।

चर्चा में क्यों?

भारत के प्रधानमंत्री ने गोपाल कृष्ण गोखले को उनकी जयंती पर उन्हें श्रद्धांजलि दी ।

- गोपाल कृष्ण गोखले एक महान समाज सुधारक और शक्तिवाद थे जिन्होंने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन को अनुकरणीय नेतृत्व प्रदान किया ।

गोपाल कृष्ण गोखले:

- **जन्म:** इनका जन्म 9 मई, 1866 को वर्तमान महाराष्ट्र (तत्कालीन बॉम्बे प्रेसीडेंसी का हिस्सा) के कोटलुक गाँव में हुआ था ।



वचिारधारा:

- गोखले ने सामाजिक सशक्तीकरण, शिक्षा के वस्तितार और तीन दशकों तक भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की दशा में कार्य किया तथा प्रतिक्रियावादी या क्रांतिकारी तरीकों के इस्तेमाल को खारजि किया ।

औपनविशकि वधिानमंडलों में भूमकिा:

- वर्ष 1899 से 1902 के बीच वह बॉम्बे लेजसिलेटवि काउंसलि के सदस्य रहे और वर्ष 1902 से 1915 तक उन्होंने इम्पीरियल लेजसिलेटवि

काउंसलि में काम किया।

- इम्पीरियल लेजिस्लेटिव काउंसलि में काम करने के दौरान गोखले ने वर्ष 1909 के मॉर्ले-मटो सुधारों को तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

भारतीय राष्ट्रीय कॉंग्रेस में भूमिका:

- वह भारतीय राष्ट्रीय कॉंग्रेस (INC) के नरम दल से जुड़े थे (वर्ष 1889 में शामिल)।
- बनारस अधिवेशन 1905 में वह INC के अध्यक्ष बने।
 - यह वह समय था जब 'नरम दल' और लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक तथा अन्य के नेतृत्व वाले 'गरम दल' के बीच व्यापक मतभेद पैदा हो गए थे। वर्ष 1907 के सूरत अधिवेशन में ये दोनों गुट अलग हो गए।
 - वैचारिक मतभेद के बावजूद वर्ष 1907 में उन्होंने लाला लाजपत राय की रहिाई के लिये अभियान चलाया, जिन्हें अंग्रेजों द्वारा म्याँमार की मांडले जेल में कैद किया गया था।

संबंधित सोसाइटी तथा अन्य कार्य:

- भारतीय शिक्षा के वसितार के लिये वर्ष 1905 में उन्होंने सर्वेंट्स ऑफ इंडिया सोसाइटी (Servants of India Society) की स्थापना की।
- वह महादेव गोवर्धन रानाडे द्वारा शुरू की गई 'सार्वजनिक सभा पत्रिका' से भी जुड़े थे।
- वर्ष 1908 में गोखले ने रानाडे इंस्टीट्यूट ऑफ इकोनॉमिक्स की स्थापना की।
- उन्होंने अंग्रेज़ी साप्ताहिक समाचार पत्र 'द हतिवाद' की शुरुआत की।

गांधी के गुरु के रूप में:

- एक उदार राष्ट्रवादी के रूप में महात्मा गांधी ने उन्हें राजनीतिक गुरु माना था।
- महात्मा गांधी ने गुजराती भाषा में गोपाल कृष्ण गोखले को समर्पित एक पुस्तक 'धर्मात्मा गोखले' लिखी।

मॉर्ले-मटो सुधार 1909:

- इसके द्वारा भारत सचिव की परिषद, वायसराय की कार्यकारी परिषद तथा बंबई और मद्रास की कार्यकारी परिषदों में भारतीयों को शामिल किया।
वधानपरिषदों में मुसलमिाँ हेतु अलग नरिवाचक मंडल की बात की गई।
 - भारतीय राष्ट्रवादियों द्वारा इन सुधारों को अत्यधिक एहतयिाती माना गया तथा मुसलमानों हेतु पृथक नरिवाचक मंडल के प्रावधान से हट्टि नाराज़ थे।
 - केंद्रीय और प्रांतीय वधानपरिषदों के आकार में वृद्धिकी गई।
 - इस अधिनियम ने इम्पीरियल लेजिस्लेटिव काउंसलि में सदस्यों की संख्या 16 से बढ़ाकर 60 कर दी।
- केंद्र और प्रांतों में वधानपरिषदों के सदस्यों की चार श्रेणियाँ थीं जो इस प्रकार हैं:
 - पदेन सदस्य: गवर्नर-जनरल और कार्यकारी परिषद के सदस्य।
 - मनोनीत सरकारी सदस्य: सरकारी अधिकारी जिन्हें गवर्नर-जनरल द्वारा नामति किया गया था।
 - मनोनीत गैर-सरकारी सदस्य: ये गवर्नर-जनरल द्वारा नामति थे लेकिन सरकारी अधिकारी नहीं थे।
 - नरिवाचति सदस्य: वभिनिन वर्गों से चुने हुए भारतीय।
 - नरिवाचति सदस्यों को अपरत्यक्ष रूप से चुना जाना था।
- भारतीयों को पहली बार इम्पीरियल लेजिस्लेटिव काउंसलि (Imperial Legislative Council) की सदस्यता प्रदान की गई।
- मुसलमानों हेतु पृथक नरिवाचक मंडल की बात की गई।
 - कुछ नरिवाचन क्षेत्र मुसलमिाँ हेतु नश्चिति कयि गए जहाँ केवल मुसलमि समुदाय के लोग ही अपने प्रतिनिधियों के लिये मतदान कर सकते थे।
- सत्येंद्र पी. सनिहा वायसराय की कार्यकारी परिषद में नयुक्त होने वाले पहले भारतीय सदस्य थे।

वगित वर्षों के प्रश्न:

प्रश्न. नमिनलखिति में से कसिने नाइटहुड की उपाधिको अस्वीकार और भारत के लयि राज्य सचवि की परिषद में पद स्वीकार करने से इनकार कर दयिा? (2008)

- (A) मोतीलाल नेहरू
- (B) एम.जी. रानाडे
- (C) जी.के. गोखले
- (D) बीजी तलिक

उत्तर: (C)

स्रोत: पी.आई.बी.

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/gopal-krishna-gokhale-1>

